Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

विशेष विद्यालयों के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव

डॉ0 मुकुन्द मोहन पाण्डेय
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डिर्पाटमेण्ट ऑफ स्पेशल एजुकेशन (एच.आई.) जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 207-213
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन में विशेष विद्यालयों के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव ज्ञात किया गया है। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के सन्दर्भ में 'कार्योत्तर अनुसंधान विधि' का प्रयोग किया गया है। प्रयागराज जनपद में स्थित विशेष विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा विशेष विद्यालयों का चयन किया जायेगा। तात्पश्चात् यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि द्वारा विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित 60 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। मनोसामाजिक स्तर मापनी का निर्माण के लिए अध्ययनकर्त्ता स्वनिर्मित मापनी तथा डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु एनोवा एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षणोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये– विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का नकारात्मक प्रभाव है।

की–वर्ड : विशेष विद्यालय, श्रवण बाधित, छात्र–छात्राएँ, समायोजन क्षमता, मनो–सामाजिक कारक, प्रभाव, एनोवा, टी–अनुपात।

प्रस्तावना– जिन किशोर छात्र–छात्राओं की आकांक्षाएँ पूर्णता प्राप्त नहीं करती है वे चिन्ता से ग्रसित होकर विभिन्न प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक बीमारी जैसे बेचैनी, अवसाद, नींद न आना आदि उत्पन्न हो जाता है। समाज का हर वर्ग आज की तमाम परिस्थितियों के मद्दे नजर आर्थिक सुरक्षा को लेकर काफी जागरूक हुआ है। आर्थिक सुरक्षा की भावना के कारण आपस में प्रतिस्पर्धाएँ भी बढ़ती है। अर्थ की इस चाहत से चाहे लाभ जितना हुआ हो लेकिन भाग– दौड़ अनियमित जीवन शैली और जीवन जीने सम्बन्धी तमाम अनियमितताओं क कारण बहुत सारी विसंगतियाँ भी उभर कर सामने आयी है। जीवन जीने की इस अनियमित शैली के कारण चिन्ता तथा मानसिक बीमारियाँ बढ़ी है। सच बात तो यह है कि मनोरोगियों की बढ़ती जनसंख्या विश्वव्यापी समस्या बनती जा रही है। इस भाग दौड़ में शामिल होने से उन्हें यहाँ भी अपनापन महसूस नहीं होता है। इस कारण से समायोजन की समस्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है और बच्चा घर तथा स्कूल दोनों जगहों पर अपने आपको उपेक्षित महसूस कर तनाव, चिन्ता, बेचैनी, अवसाद, कुण्ठा आदि का शिकार हो जाता है। इसलिए बच्चे मनोरोगी होते जा रहे हैं। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि छात्रों के चिन्ता, समायोजन क्षमता एवं मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विद्यालय का मुख्य उद्देश्य शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ एवं प्रसन्न बच्चा होना चाहिए न कि परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र तैयार करना। इसके लिए सीखने–सिखाने का आनन्ददायक वातावरण निर्मित करने पर जोर दिया जाना चाहिए। जहां बच्चें सीखने का आनन्द ले सकें। ज्ञान के प्रति प्रेम विकसित कर सकें। तथ्यों एवं विषय को रटने का तनाव एवं दुश्चिंता से मुक्त होकर ज्ञान सृजन की प्रक्रिया का हिस्सा बन सकें।

बालकों के जीवन में विद्यालय का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। विद्यालय का वातावरण, बोझिल पाठ्यक्रम, अरुचिपूर्ण शिक्षण विधियाँ, भय, आतंक, दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, भौतिक सुविधाओं की कमी आदि बालकों के चिन्ता, समायोजन क्षमता एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

समाज के विकास के लिए यह आवश्यक है कि समाज के सभी सदस्य आपस में सामंजस्य बनाकर कार्य करें और अपनी आने वाली पीढ़ी को भी अपने मूल्यों, संस्कारों आदर्शों का ज्ञान कराते हुए उन्हें भविष्य का एक योग्य नागरिक बनाये। इस उद्देश्य की पूर्ति का एक प्रमुख माध्यम शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही समाज का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास होता हैं एक सुरक्षित और उन्नतशील भविष्य का अगर निर्माण करना है तो सर्वप्रथम शिक्षा पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही एक परिपक्व मन–मस्तिष्क वाले बालक को सही दिशा देते हुए परिपक्व अवस्था में लाया जाता है। यही बालक अपने इन्हीं विचारों मूल्यों आदि के द्वारा आगे अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है। उपरोक्त कारणों से इस विषय की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथन– विशेष विद्यालयों के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव।

उद्देश्य

1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान विधि– प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के सन्दर्भ में **'कार्योत्तर अनुसंधान विधि'** का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– प्रयागराज जनपद में स्थित विशेष विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श– सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा विशेष विद्यालयों का चयन किया जायेगा। तात्पश्चात् यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि द्वारा विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित 60 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

उपकरण– मनोसामाजिक स्तर मापनी का निर्माण के लिए अध्ययनकर्त्ता स्वनिर्मित मापनी तथा डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधियाँ–

अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु एनोवा एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना–

H_{01} विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन का एफ–मान

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	2751.85	1375.92	16.65	F.01(2,59)=4.98
समूहों के अन्दर	57	4709.75	82.63		
कुल	59	7461.60	1458.55		

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि F का परिकलित मान 16.65 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर df सारणी मान 4.98 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त तथा शोध परिकल्पना H_1 को स्वीकृत किया जाता है। अतः इस सार्थक अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रतिदर्श मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अर्थात् विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है।

सारणी संख्या 1.1

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र. सं.	समूह	N	M	$(M_1 \sim M_2)$	σ_D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च मनोसामाजिक	15	27.80	2.95	3.97	1.35	0.01 स्तर पर असार्थक
	मध्यम मनोसामाजिक	26	31.77				
2.	उच्च मनोसामाजिक	15	27.80	3.14	16.67	5.31	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न मनोसामाजिक	19	44.47				
3.	मध्यम मनोसामाजिक	26	31.77	2.74	12.70	4.63	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न मनोसामाजिक	19	44.47				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम मनो–सामाजिक विद्यार्थियों समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 1.35 है जो df 39 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.71 से कम है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम मनो–सामाजिक विद्यार्थियों समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न मनोसामाजिक विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 5.31 है जो df 32 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.76 से अधिक है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न मनोसामाजिक विद्यार्थियों समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न मनोसामाजिक विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों

के अन्तर का टी–मान 4.63 है जो df 43 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.71 से अधिक है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न मनोसामाजिक विद्यार्थियों समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। परिणामतः कहा जा सकता है कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का नकारात्मक प्रभाव है अर्थात् मनो–सामाजिक कारक में वृद्धि होने पर श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन में कमी तथा मनो–सामाजिक कारक में कमी होने पर श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन में वृद्धि होगी।

2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना–

H_{02} विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन का एफ–मान

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	1338.82	669.41	6.77	F.01(2,27)=5.49
समूहों के अन्दर	27	2668.15	98.82		
कुल	29	4006.97	768.23		

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि F का परिकलित मान 6.77 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर df सारणी मान 5.49 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त तथा शोध परिकल्पना H_2 को स्वीकृत किया जाता है। अतः इस सार्थक अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रतिदर्श मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अर्थात् विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है।

सारणी संख्या 2.1

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र. सं.	समूह	N	M	(M_1~M_2)	σ_D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च मनोसामाजिक	8	26.25	4.54	10.00	2.20	0.01 स्तर पर असार्थक
	मध्यम मनोसामाजिक	12	36.25				
2.	उच्च मनोसामाजिक	8	26.25	4.72	17.35	3.68	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न मनोसामाजिक	10	43.60				
3.	मध्यम मनोसामाजिक	12	36.25	4.26	7.35	1.73	0.01 स्तर पर असार्थक
	निम्न मनोसामाजिक	10	43.60				

सारणी संख्या 2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम मनो–सामाजिक छात्रों समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 2.20 है जो df 18 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पार सारणी मान 2.88 से कम है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम मनो–सामाजिक छात्रों समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न मनोसामाजिक छात्रों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 3.68 है जो df 16 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.92 से अधिक है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न मनोसामाजिक छात्रों समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न मनोसामाजिक छात्रों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 1.73 है जो df 20 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.84 से कम है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न मनोसामाजिक छात्रों समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परिणामतः कहा जा सकता है कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का नकारात्मक प्रभाव है अर्थात् मनो–सामाजिक कारक में वृद्धि होने पर श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन में कमी तथा मनो–सामाजिक कारक में कमी होने पर श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन में वृद्धि होगी।

3. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना–

H_{03} विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन का एफ–मान

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	1826.22	913.11	16.04	F.01(2,27)=5.49
समूहों के अन्दर	27	1537.15	56.93		
कुल	29	3363.37	970.04		

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि F का परिकलित मान 16.04 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर df सारणी मान 5.49 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त तथा शोध परिकल्पना H_3 को स्वीकृत किया जाता है। अतः इस सार्थक अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रतिदर्श मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अर्थात् विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है।

सारणी संख्या 3.1

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र. सं.	समूह	N	M	$(M_1 \sim M_2)$	σ_D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च मनोसामाजिक	8	27.50	3.39	1.58	0.47	0.01 स्तर पर असार्थक
	मध्यम मनोसामाजिक	13	29.08				
2.	उच्च मनोसामाजिक	8	27.50	3.67	17.94	4.89	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न मनोसामाजिक	9	45.44				
3.	मध्यम मनोसामाजिक	13	29.08	3.27	16.37	5.00	0.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न मनोसामाजिक	9	45.44				

सारणी संख्या 3.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम मनो–सामाजिक छात्राओं समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 0.47 है जो df 18 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पार सारणी मान 2.86 से कम है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम मनो–सामाजिक छात्राओं समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न मनोसामाजिक छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 4.89 है जो df 16 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.98 से अधिक है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न मनोसामाजिक छात्राओं समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न मनोसामाजिक छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 5.00 है जो df 20 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.84 से कम है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न मनोसामाजिक छात्राओं समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परिणामतः कहा जा सकता है कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का नकारात्मक प्रभाव है अर्थात् मनो–सामाजिक कारक में वृद्धि होने पर श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन में कमी तथा मनो–सामाजिक कारक में कमी होने पर श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन में वृद्धि होगी।

निष्कर्ष– अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का नकारात्मक प्रभाव है।
2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का नकारात्मक प्रभाव है।
3. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न मनो–सामाजिक समस्याओं वाले श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है। अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्राओं के समायोजन पर मनो–सामाजिक कारकों का नकारात्मक प्रभाव है।

सुझाव– श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए मुक्त शिक्षा की व्यवस्था कर एवं उनके मनोसामाजिक से सम्बन्धित बातों को ध्यान में रखना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव न पड़ें तथा शिक्षकों को भी विद्यार्थियों के समायोजन का ध्यान देना चाहिए जिससे विद्यार्थी जीवन में संवेग उच्च न होने पाये एवं घर में भी माता–पिता का अपने बच्चों के बातों का ध्यान रखना चाहिए तथा उनकी माँगों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। जो चीजें माता–पिता के बस में है उन्हें उनको पूरा करना चाहिए एवं विद्यार्थियों की माँग उच्च है तो उन्हें समझाना चाहिए तथा अपने सामाजिक–आर्थिक स्तर का ज्ञान कराना चाहिए जिससे विद्यार्थी दुबारा इस प्रकार की सोच न रखें एवं मनोसामाजिक न होने पाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.कुमार, महेन्द्र (2017). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, जगत्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट।

2.कुन्दू, मौमिता एवं अन्य (2015). एडजेस्टमेन्ट ऑफ अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर सोशल इंटेलीजेन्स, अमेरिकन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–3, नं0 11, पृ0 1398–1401

3.चौहान एवं गुप्ता (2016). विभिन्न जाति वर्गों में यौन भिन्नता के परिप्रेक्ष्य में चयनित मनोसामाजिक चरों (बुद्धि एवं सृजनात्मकता) की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन, ह्युमिनिस्ट्ज एण्ड सोशल सांइसेस : इन्टरडिस्पिलनरी एपरोच, वॉ0 8, इश्शू–01

4.झझरिया एवं झझरिया (2015). कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतें व समायोजन का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइंस रिसर्च रिव्यू, वॉल्यूम–2, इश्शू–3, पृ0 46–5
5.पूजा भगत (2016). सेल्फ इफीकेशी एण्ड एडजेस्टमेण्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर जनरल एण्ड एकेडमिक एचीवमेण्ट, आई.जे.ए.पी.आर.आर. वॉल्यूम–3, इश्शू–8, पृ0 917
6.प्रधान, भाबाग्राही एवं कुमार, सुरेन्द्र (2018). माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्फार्मेशन मूवमेण्ट, वॉ0 2, इश्शू–XI, पृ0 176–182
7.मनीकन्दन एवं सेलवराजू (2017). एडजेस्टमेण्ट बिहैवियर एण्ड एकेडमिक एचिवमेण्ट ऑफ हायर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स – लोकल्टी ऑफ स्कूल वाइज एनॉलसिस, पैरीपेक्स–इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉल्यूम–6, इश्शू–11, पृ0 525–526
8.मिश्रा, विजेन्द्र (2016). मूक बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन, शोधयातन–ए.आई.एस.ई.सी.टी. यूनिवर्सिटी जर्नल, वॉल्यूम–III, इश्शू–VI, पृ0 489–491
9.रावत, बी0 एवं राज, ए0 (2017). स्टडी ऑफ द इफेक्ट ऑफ एजूकेशनल एचिवमेण्ट ऑन ऐडजेस्टमेन्ट ऑफ बी0एड0 प्यूपिल–टीचर्स। इन्टरनेशनल एजूकेशन एण्ड रिसर्च जर्नल, 3(3)।
10.राजपूत एवं सिंह (2016). माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, नार्थ एशियन इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड ह्युमिनिट्ज, वॉल्यूम–2, इश्शू–5, पृ0 1–13
11.राजू एवं रहमतुल्ला (2007). ऐडजेस्टमेन्ट प्रॉब्लम्स एमंग स्कूल स्टूडेन्ट्स, जर्नल ऑफ द इण्डियन ऐकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, 33 (1), पृ0 73–79
12.वर्मा, किरन (2017). विद्यार्थियों में समायोजन की समस्याएँ एवं समाधान, परीफेक्स–इण्डियन जर्नल ऑफ रिर्सच, वॉल्यूम–6, इश्शू–11, पृ0 738–739
13.शर्मा एवं कौशिक (2018). सीकर जिले के हाईस्कूल स्तर के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन, एरियो इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम–XIV।
14.शर्मा एवं पड़ेगाँवकर (2013). किशोर बालिकाओं में सुरक्षा की भावना एवं समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ फण्डामेण्टल एण्ड एप्लाईड रिसर्च, वॉल्यूम–1, इश्शू–6, पृ0 3–7।
15.सैनी एवं शुक्ला (2017). माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन का अध्ययन, शोध प्रतिवेदन, बियानी गर्ल्स बी0एड्0 कॉलेज, जयपुर, राजस्थान।
16.सिंह, भारती (2018). सामान्य एवं दिव्यांग बालकों में नैराश्य व उसके विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन, इनोवेशन द रिसर्च कन्सेप्ट, वॉल्यूम– 3, इश्शू–3, पृ0 54–56